अध्याय 16

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन प्रत्येक विश्वासी का लक्ष्य होना चाहिए। परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण होना यह एक दूसरा कदम है जिसका अनुभव प्रत्येक मसीही के जीवन में होना चाहिए। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन ऐसा जीवन है जो सम्पूर्ण रूप से प्रभु को समर्पित हो।

यीशु ने अपने चेलों से यह प्रतिज्ञा की थी कि जब वह अपने पिता के पास वापस जाए तो एक सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा भेजेगा।

> और मैं पिता से विनती करूंगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे अर्थात् सत्य की आत्मा जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है : तुम उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुममें होगा (यूहन्ना १४:१६-१७)।

पवित्र आत्मा का इस प्रकार आना पिन्तेकुस्त के दिन हुआ। प्रेरितों के काम, दूसरे अध्याय में इसका वर्णन दिया हुआ है। तब से यह सम्भव हो सका कि प्रत्येक विश्वासी पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करने का अर्थ क्या है। हम यह भी अध्ययन करेंगे कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने से क्या लाभ प्राप्त होता है।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे...

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना
पवित्र आत्मा के द्वारा जीवन यापन

इस पाठ से आपको सहायता मिलेगी कि आप...

- वर्णन कर सकें कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन का अर्थ क्या है।
- अपने जीवन को जांच कर देख सकें कि क्या यह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण है। अध्ययन के द्वारा प्राप्त चीजें आप के जीवन में हैं या नहीं।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना

उद्देश्य १. पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन की कुछ विशेषताओं को जानना।

इफिसियों ५:१८ हमें सिखाता है कि "आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ"। यह तब होता है जब हम नया जन्म प्राप्त कर लेते हैं तथा पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त कर लेते हैं। यीशु ने इन शब्दों का प्रयोग, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, उस खूबसूरत अनुभव के विषय में किया था जिसे उसके चेले प्राप्त करने वाले थे।

प्रेरितों के काम १:५ में उसने कहा "यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे"।

विश्वासियों के रूप में हम भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त कर सकते हैं, ठीक उसी तरह जैसे उसके चेलों ने प्राप्त किया था, जिन्होंने विश्वास, धन्यवाद एवं परमेश्वर की स्तुति करते हुए उसका इंतजार किया था। उन्होंने यीशु के निर्देश का पालन किया था जब उसने कहा कि "देखो जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है मैं उसको तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो" (लूका २४:४९)।

एक तरीका जिससे हम जान सकते हैं कि हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं वह यह है कि हमें परमेश्वर की सामर्थ प्राप्त होगी ठीक वैसे ही जैसे पिन्तेकुस्त के दिन विश्वासियों को प्राप्त हुई थी। पवित्र आत्मा हममें होकर वे भाषाएं बोलेगा जिन्हें हम जानते नहीं "और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और जिस प्रकार पवित्र आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी वे अन्य भाषा बोलने लगे" (प्रेरितों के काम २:४)।

यह महत्वपूर्ण है कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन के द्वारा चारित्रिक गुण प्रगट होने चाहिए जिन्हें हम बहुधा "पवित्र आत्मा के फल" कहते हैं

"पर आत्मा के फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम हैं" (गलतियों ५:२२-२३)।

यदि हम सोचते हैं कि हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं और ये गुण हमारे जीवन के द्वारा प्रगट न हों तो प्रभु से पूछें कि हममें किस बात की कमी है। यदि ये गुण हममें न हों तो हम अपने जीवन के द्वारा होने वाले पवित्र आत्मा के कार्य पर बाधा डालते हैं।

और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है (इफिसियों ४:३०)।

परमेश्वर की इच्छा का पालन करने के द्वारा हम अपने जीवन को पवित्र आत्मा से परिपूर्ण रख सकते हैं।

"और दाखरस से मतवाले न बनो क्योंकि इससे लुचपन होता है पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ और आपस में भजन और स्तुति-गान और आत्मिक गीत गाया करो। और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो। और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।" (इफिसियों ५:१८-२०)।

धर्मशास्त्र के ये वचन इस बात के समझने में हमारी सहायता करते हैं कि पवित्र आत्मा में जीवन यापन का अर्थ क्या है। जब हम पवित्र आत्मा को अपने जीवन का मार्ग दर्शन करने की अनुमति दे देते हैं तो हम एक परिपक्व मसीही जीवन में बढ़ते एवं विकसित होते चले जाते हैं (गलतियों ५:१६)। पवित्र आत्मा हमें जीवित एवं सक्रिय रखता है। हम उसकी सेवा के लिए स्वयं को तैयार एवं मजबूत महसूस करते हैं। यह विचार २ कुरिन्थियों ४:१६ में दिया गया है "इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है तो भी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रति दिन नया होता जाता है।"

जो आपको करना है

१. नीचे दिए गए वाक्य को भली भांति पूर्ण करने वाले प्रत्येक कथन के सामने के अक्षर पर वृत्त खींच दें।

जब पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त होता है तो विश्वासी

अ. अपरिचित भाषाएं बोलता है।

ब. गलतियों ५ में दर्शाए गए "फल" प्रगट करता है।

स. आत्मिक रूप से बढ़ता है।

ड. पवित्र आत्मा को अपने जीवन का मार्ग दर्शन की अनुमति देता है।

२. इफिसियों ५:१७-२१ दोबारा पढ़ें। इन पदों के आधार पर कम से कम तीन कार्य-कलापों की सूची तैयार करें जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण मसीही को करने चाहिए।

.....

.....

.....

३. गलतियों ५:१६ के अनुसार पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन-यापन का भेद क्या है?

.....

.....

पवित्र आत्मा के द्वारा संभाला जाना

उद्देश्य २. यह जानना कि पवित्र आत्मा एक विश्वासी को कैसे संभालता है एवं मसीही व्यवहार और पवित्र आत्मा के वरदान के बीच सम्बन्ध कैसा है।

पवित्र आत्मा को हमारे सहायक के रूप में भेजा गया था। इसका दूसरा नाम सान्त्वना देने वाला कहा गया है। जब कोई हमें सान्त्वना देता है तो हमारा जीवन सरल हो जाता है। जब हम कोई दबाव महसूस करते हैं तो वह हमें ऊंचा उठाता है। पवित्र आत्मा के द्वारा संभाले जाने का अर्थ यही है।

पवित्र आत्मा हमें संभालता है। मसीही विकास के हर पहलू में वह हमारी सहायता करता है। प्रार्थनामय जीवन-यापन में वह हमारी सहायता करता है। "हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिए। परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर-भर कर जो बयान से बाहर हैं हमारे लिए विनती करता है" (रोमियों ८:२६)।

पवित्र आत्मा हमारा मार्गदर्शन करता है। रोमियों ८:१४ कहता है "इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर की आत्मा के चलाए चलते हैं वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।"

पवित्र आत्मा सत्य का आत्मा है जो सारी सच्चाई की ओर ले चलने वाला महान गुरु एवं मार्ग दर्शक है। "सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुम से कहा है वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा" (यूहन्ना १४:२६)। "जब पवित्र आत्मा आएगा जो परमेश्वर के विषय सत्य को प्रगट करता है, वह तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा (यूहन्ना १६:१३)।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के फलस्वरूप कई प्रकार के वरदान हमें पवित्र आत्मा के द्वारा प्राप्त होते हैं। इन वरदानों की सहायता से परमेश्वर के

लिए अपना कार्य करना बहुत सरल हो जाता है, बजाए इसके कि अपने स्वयं की सामर्थ से। इन वरदानों में से एक हैं, मसीही सेवा के लिए सामर्थ।

परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सारे सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे (प्रेरितों के काम १:८)।

पवित्र आत्मा अपना वरदान हमारे लिए उपलब्ध रखता है जो कि मसीही सेवा के लिए विशेष प्रबन्ध है। "वरदान तो कई प्रकार के हैं परन्तु आत्मा एक ही है" (१ कुरिन्थियों १२:४)। आत्मा के वरदान जो १ कुरिन्थियों १२:८-११ में दिए गए हैं, वे हैं : बुद्धि की बातें, ज्ञान की बातें, विश्वास, चंगाई, आश्चर्य कर्म, भविष्यद्वाणी, आत्माओं की परख, अन्य भाषा, अन्य भाषाओं का अर्थ। और भी दूसरे वरदान एवं गुण हैं जो परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा हमें देना चाहता है।

और जबकि हमें उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे। यदि सेवा करने का दान मिला हो तो सेवा करने में लगा रहे और यदि कोई सिखाने वाला हो तो सिखाने में लगा रहे। जो उपदेशक हो वह उपदेश देने में लगा रहे। दान देने वाला उदारता से दे। जो अगुआई करे वह उत्साह से करे जो दया करे वह हर्ष से करे। प्रेम निष्कपट हो। बुराई से घृणा करो, भलाई में लगे रहो। भाई-चारे के प्रेम से एक दूसरे के ऊपर मया रखो। परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। प्रयत्न करने में आलसी न हो। आत्मिक उन्माद में भरे रहो। प्रभु की सेवा करते रहो। (रोमियों १२:६-११)।

पवित्र आत्मा परमेश्वर की सन्तान को आशीष एवं महिमा भी देता है।

आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और यदि सन्तान है, तो वारिस भी वरन परमेश्वर के वारिस

और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुःख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं।

पवित्र आत्मा का अद्भुत रूप से उंडेला जाना आज भी इस आधुनिक समय में वैसा ही है जैसा कि बीते दिनों में था।

परमेश्वर बहुत से मसीहियों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दे रहा है। आइए प्रार्थना करें कि यह लगातार होता रहे। प्रार्थना करें कि आपकी कलीसिया का पास्टर, अगुए एवं सभी सदस्य परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण हो एवं उसके द्वारा इस्तेमाल किए जाएं।

यही वह आत्मा है जो हमें संभाल कर रखता है, यहां तक कि जब हमें समस्याओं का या भूख, मेहनत, सताव, गरीबी या मौत का सामना करना पड़े.... "परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर है" (रोमियों ८:३७)।

जो आपको करना है

४. जब हम कहते हैं "पवित्र आत्मा हमें संभालता है" इसका अर्थ यह है कि वह .....

.....

.....

५. पवित्र आत्मा के अन्य पांच नाम जो इस पाठ में दिए गए हैं वे दर्शाते हैं कि वह हमें कैसे संभालता है। उन नामों को लिखें

.....

.....

.....

६. निम्न में से किन परिस्थितियों में आप पवित्र आत्मा के वरदान का प्रयोग करते हैं?

अ. एक गरीब परिवार की आप मेहमानी करते हैं।

ब. सण्डे स्कूल पढाने की जिम्मेवारी स्वीकार करते हैं।

स. जब कोई स्त्री बीमार हो जाती है तो आप उसके बच्चों को सहर्ष अपने घर में रखते हैं।

ड. आप जेल के कैदियों को मुलाकात के दिन में प्रचार करते हैं।

इ. अपने कार्य करने की जगह में आप अपने मित्र को गवाही देते हैं।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. आपको सभी अक्षरों में वृत्त खींचना चाहिए क्योंकि सभी सही हैं।

४. जब हम किसी दबाव में रहते हैं तो वह हमें सान्त्वना देता है एवं ऊंचा उठाता है।

२. आप निम्न में से कोई भी तीन लिख सकते हैं : भजन और स्तुति गाना, मन में प्रभु की स्तुति करना, सब बातों के लिए धन्यवाद देना, एक दूसरे के अधीन रहना, मसीह का भय मानना।

५. सहायक, सान्त्वना देने वाला, सत्य की आत्मा, शिक्षक, मार्गदर्शक

३. पवित्र आत्मा को अपने जीवन का मार्ग दर्शन करने देना।

७. आपको प्रत्येक पर चिन्ह लगाना चाहिए। इस सूची के अनुसार आप जो भी करें, आप पवित्र आत्मा के वरदान का उपयोग करते हैं।

अब पाठ ९ — १६ तक के लिए अपनी छात्र रिपोर्ट के अन्तिम आधे भाग की पूर्ति के लिए तैयार हैं। इन पाठों को दुहराएं और तब अपनी छात्र-रिपोर्ट के निर्देशन का पालन करें। जब आप अपनी उत्तर पुस्तिका को प्रशिक्षक के पास भेजें तो उससे दूसरे पाठ्यक्रम की मांग करें।

"बधाई"

आपने यह पाठ्यक्रम पूरा कर लिया। हमें आशा है कि इससे आपको काफी सहायता मिली। स्मरण रखें कि आप अपनी छात्र रिपोर्ट के दूसरे भाग की पूर्ति करके उत्तर पुस्तिका को प्रशिक्षक को भेज दें। जैसे ही हमें दोनों उत्तर पुस्तिकाएं प्राप्त होगी, हम उन्हें जांच कर आपको वापस भेज देंगे और आप को आपका प्रमाण पत्र भेज देंगे।

अन्तिम सन्देश

यह एक विशेष प्रकार की पुस्तक है जो कि उन लोगों के द्वारा लिखी गई है जिन को आपकी चिन्ता है। ये ऐसे सुखी लोग हैं जिन्होंने ऐसे कई प्रश्नों एवं समस्याओं के उत्तर ढूंढ लिए हैं जिनसे संसार का प्रत्येक व्यक्ति चिंतित है। ये सुखी लोग ये विश्वास करते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि जो इन्हें प्राप्त है उन्हें आप तक पहुंचाएं। वे विश्वास करते हैं कि आपको कुछ महत्वपूर्ण बातों की जानकारी की आवश्यकता है जिससे आप अपनी समस्याओं एवं प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करके जीवन का सर्वोत्तम तरीका ढूंढ सकें।

उन्होंने यह पुस्तक लिखी है ताकि इन बातों की जानकारी आपको मिल सके। यह पुस्तक इन मूलभूत सच्चाइयों पर आधारित है :

१. आंपको एक उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है। रोमियों ३:२३, यहेजकेल १८:२० पढ़ें।

२. आप स्वयं को नहीं बचा सकते। १ तीमुथियुस २:५, यूहन्ना १४:६ पढ़ें।

३. परमेश्वर चाहता है कि सारा संसार बच जाए। यूहन्ना ३:१६-१७ पढ़ें।

४. परमेश्वर ने यीशु को भेजा जिसने उन सभों के लिए अपना प्राण दे दिया जो उस पर विश्वास करते हैं। गलतियों ४:४-५, १ पतरस ३:१८ पढ़ें।

५. बाइबल हमें उद्धार का रास्ता एवं मसीही जीवन में कैसे बढ़ें यह सिखाती हैं। यूहन्ना १५:५, यूहन्ना १० १०, २ पतरस ३:८ पढ़ें।

६. आप अपने अनन्तकाल के गन्तव्य स्थान का फैसला स्वयं करें। लूका १३:१-५, मत्ती १०:३२-३३, यूहन्ना ३:३५-३६ पढ़ें।

यह पुस्तक बताती है कि आप अपने गन्तव्य स्थान का फैसला कैसे कर सकते हैं और यह आपको अवसर देती है कि आप अपने फैसले को व्यक्त कर सकें। यह पुस्तक अन्य पुस्तकों से इसलिए भी भिन्न है क्योंकि यह आपको उन लोगों से सम्पर्क करने का अवसर देती है जिन्होंने यह पुस्तक तैयार की है। यदि आप प्रश्न पूछना चाहें या अपनी आवश्कयताओं एवं अनुभूतियों की व्याख्या करना चाहें तो आप उन्हें पत्र लिख सकते हैं।

इस पुस्तक के पिछले भाग में आपको एक कार्ड मिलेगा जो **निर्णय प्रतिवेदन एवं निवेदन पत्र** कहलाता है। जब आप निर्णय ले लें तो उस कार्ड को भरकर बताए अनुसार डाक से भेज दें। तब आपको अधिक सहायता मिल सकेगी। उस कार्ड को आप प्रश्न पूछने या प्रार्थना निवेदन या किसी बात की जानकारी प्राप्त करने के लिए उपयोग कर सकते हैं।

यदि इस पुस्तक में वह कार्ड न हो तो आप अपने आई.सी.आई. प्रशिक्षक को लिखें तो आप व्यक्तिगत उत्तर प्राप्त कर सकेंगे।

• • •

यहां से काटकर आई. सी. आई. प्रशिक्षक को भेंजिए

.....

निर्णय रिपोर्ट और निवेदन कूपन

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन पूरा करने के बाद, ... ' मैंने प्रभु यीशु मसीह में अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु जानकर विश्वास किया है। मैं अपने हस्ताक्षर करके व पता लिखकर यह कूपन लौटा रहा/रही हूं, जिसके दो कारण हैं। पहिला, मसीह के प्रति अपने समर्पण की साक्षी हूं, दूसरा, अपने आत्मिक जीवन में सहायता पाने हेतु और अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकूं।

नाम _____

पूरा पता .....

.....

हस्ताक्षर _____

क्या आप जानना चाहते हैं कि...

- परमेश्वर एवं मनुष्य के विषय में?
- उद्धार कैसे प्राप्त होता है?
- आत्मिक जीवन का विकास कैसे होता है?
- पवित्र आत्मा के विषय में और अधिक

क्या आप दूसरों को बता सकते हैं कि आप क्या एवं क्यों विश्वास करते हैं? क्या उन्हें बता सकते हैं कि बाईबिल उद्धार के विषय में क्या कहती है? क्या आप नए मसीहियों की सहायता करना चाहेंगे? हमारा विश्वास आपकी आवश्यकता की एक पुस्तक है। इसके प्रश्न उत्तर एवं मुखाग्र कार्य आपके आत्मिक बढ़ती में सहायक होंगे।

इसकी रुचिकर स्वयं-शिक्षणा-विधि आपके अध्ययन को सरल बना देती है। आप केवल निर्देशन का पालन करें एवं आगे बढ़ते हुए अपने को जांचें।

इन्टरनेशनल कारेसपोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बैग नं. 1, एन्ड्रयूज गंज,
नई दिल्ली-110 049

L3330HN90